हास्यम् व्यंग्यम्

काव्य संग्रह

डॉ. सपन सिन्हा

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

हास्यम्-व्यंग्यम्

हास्य-व्यंग्य संग्रह

डॉ. सपन सिन्हा

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN - " 978-93-5372-050-6"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक - प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं मिडिया प्रभारी - संदीप कुमार सोनी

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५६

मोबाईल- ६४२४७६५२५६

अणुडाक - antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना - www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण - २०१६, डॉ. सपन सिन्हा

आवरण चित्र - **संदीप सोनी, वारासिवनी**

मूल्य - ६०.०० रूपये

मूद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी**

HASYAM VYANGAM BY DR. SAPAN SINHA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपीएवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में आविा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैलीएवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

समर्पण

मेरे
आदर्श
मार्गदर्शक
पिताजी (बप्पा)
स्व. रामनंदन प्रसाद सिन्हा
को
समर्पित

अपनी बात

विद्यार्थी जीवन से ही कविताएं पढना अच्छा लगता था। विद्यालय में भी सांस्कृतिक कार्यक्रम में पंत, निराला, दिनकर, की कविताएं खुब सुनाया करता था और ढेरों पुरस्कार पाये। शायद उसी समय से कविता लिखने की इच्छा जगी होगी। फिर कवि सम्मेलनों में सुरेन्द्र शर्मा, अशोक चक्रधर, माणिक वर्मा, मधुप पाण्डेय जी जैसे हास्य कवियों को सुनने का मौका मिला, तब ही से हास्य व्यंग्य की ओर झुकाव हुआ, शुरुआती दौर में क्षणिकाएं लिख लिख कर वरिष्ठ रचनाकारों के नजरों में आया।

समाचार पत्रों में रचनाओं के छपने से उत्साह बढा, फिर नगर के वरिष्ठ साहित्यकारों से बहुत कुछ सीखने का मौका मिला। मंच पर काव्य पाठ करने का अवसर वरिष्ठ साहित्यकारों ने दिलाया।

धीरे-धीरे हास्य-व्यंग्य की समझ बनने लगी और मेरी कविताएं मंचो पर सराही जाने लगी। इस संग्रह में मैने अपनी शुरुआती दौर की कविताओ को स्थान दिया है जो मंचो पर पढी गई है। विगत तीस वर्षों से कविताओं का लेखन तथा विभिन्न मंचो पर काव्य पाठ का सिलसिला चला आ रहा है। आकाशवाणी अम्बिकापुर से भी समय-समय पर मेरी कविताओं का प्रसारण होता आ रहा है।

मै अंतरा शब्द शक्ति की संस्थापक डॉ. प्रीति सुराना का आभारी हूँ जिन्होंने मेरी रचनाओं को प्रकाशित करने का बीडा ऊठाया है।

मेरी पत्नी श्रीमती स्नेहलता सिन्हा का सहयोग, बेटी सुप्रिया (हंसा) आशीष (दामाद जी), बेटा सुप्रीत (शिबु) को भी अपने पापा के कविताओं को पुस्तक रुप में देखने की तीब्र इच्छा है

हास्यंम्-व्यंगम् आपके हाथों में है। कमियाँ जरुर होगी, फिर भी आपके चेहरे पर हंसी जरुर आयेगी। अपनी प्रतिक्रिया से मुझे अवगत करायेंगे।

डॉ. सपन सिन्हा

अनुक्रमणिका

1.	नया वर्ष	7
2.	पहलवान की बीबी	9
3.	आमरण अन्नशन	11
4.	बड़े गर्व की बात है	12
5.	जन सेवा	13
6.	सफलता का राज	14
7.	ससुराल में होली	15-16
8.	बड़े घर की बेटी	17-18
9.	भाँग की बरफी	19-20
10.	सरसों तेल काँड	21
11.	बाथरूम में गीत	22
12.	विदेशी हाथ	22
13.	भाषण	23
14.	चंदा धंधा	24-25
15.	बस यात्रा	26
16.	परीक्षा फल	27
17.	प्रियतमा	27
18.	साली महिम	28
19.	बेटी	29
20.	मायका	30-31
21.	आशियाना	32

नया वर्ष

मै भी नया वर्ष
मनाने की सोच रहा था,
चियर्स के लिये
एक पार्टनर खोज रहा था,

मैने राम लाल को बुलाया
रामलाल आया,
मैने कहा- राम लाल
आओ! आओ!
मेरे साथ नया वर्ष मनाओ
आज देशी नहीं,
विदेशी पिलाऊंगा !
बैठे-बैठे
जन्नत की सैर कराऊंगा,

अरे! यार
जो साल भर जीता है
वही तो नये में
छक कर पीता है,
यह सुन राम लाल बोला
अरे! अरे साहब
सुना है
इस साल
देश में सूखा है
इसीलिए मेरा परिवार
तीन दिनो से भूखा है
आज अपनी
पगार लाऊंगा
मै घर में ही
सब के साथ साग रोटी
खाऊंगा
इस तरह नया साल मनाऊंगा।

यह सुन मैं झल्लाया
बाद में
वर्मा जी का दरवाजा खटखटाया
दरवाजा खुला,
वर्मा जी का चेहरा नजर आया ,
मैंने कहा
वर्मा जी! आईये-आईये
मेरे साथ नया वर्ष मनाईये,

एक आप ही तो हैं ,
मुझे टक्कर दे पाते हैं
बाकी तो एक, दो पैक में ही,
आऊट हो जाते हैं।
यह सुन
वर्मा जी का चेहरा

उतर गया ,
फिर बोले-
लाला जी !
मैने पीना छोड दिया है
शराब से नाता
तोड लिया है

इसी के चलते घर में,
रोज किच-किच हो जाती थी,
बे वजह पत्नी,
मेरे हाथों
पिट जाती थी,

एक दिन गुस्से में,
मायके जाने को तैयार हो गई,
उसी दिन ट्रेन दुर्घटना का
शिकार हो गई,

आज उसकी याद में,
एक दीप जलाऊंगा,
इस तरह
नया साल मनाऊंगा

यह सुन मै
वहाँ से आगे
कदम बढाया,
सामने गुरु देव को देखा,
तो चकराया-हडबडाया,

मै कुछ बोलता
इसके पहले गुरु देव बोले,
अपना मुँह खोले
लाला !
मैं तुझे अच्छी तरह जानता हूँ
रग-रग पहचानता हूँ

अरे! जितनी दौलत,
तू पीने में बहायेगा,
उतने मे कई गरीबों का
पेट भर जायेगा।

और सुन !
जिस दिन इस देश मे,
गरीबों का पेट भरा होगा
वही दिन
सबके लिये नया वर्ष होगा।

पहलवान की बीबी

कल्लू पहलवान की
पत्नी बोली-
ये जी !
पाजामे कुर्ते में
गजब ढा रहे हो
सबेरे-सबेरे कहा जा रहे हो?

कल्लू बोला-
अरी! भाग्यवान,
कल रात दद्दा ने बुलवाया था
अपना प्रोग्राम समझाया था
आज नगर बंद करवाना है
दुकाने लूटनी हैं
बसे जलवाना है।

और सून!
अबकी बार लूट का फायदा
मै भी उठाऊंगा।
तेरे लिए भी कलर टीवी, वीसीआर
और गहने जेवर लेकर आऊंगा।

इस प्रोग्राम को सफल बनाया
तो दद्दा
मेरा लोहा मान जाएगे।
तभी तो चुनाव में,
टिकिट दिलवायेगे।

जीत के बाद,
दद्दा के सारे हथकंडे अपनाऊंगा।
यहॉ तो क्या,
राजधानी तक की कुर्सी हथियाऊंगा।

और सून!
इस नगर में हम,
इकलौते नवाब होगे,
दद्दा की तरह
हम भी घोटालों के
सरताज होंगे।

अरे! जेल यात्रा भी,
हमारी बडी शान से होगी,
तभी तो तू,
मेरी कुर्सी पे,
विराजमान होगी।

यह सून!
कल्लू की पत्नी ने
अपना सिर पीट लिया,

पकडा कुर्ता
और अपनी ओर खींच लिया

बोली-
सूनो जी!
मैं कोई जलेबी, रबडी
या रसगुल्ला,
नहीं हूँ
जो अपने ढंग से खाओगे,
जो चाहोगे वही मनवाओगे,
अरे दंगो से,
क्या किसी का भला होता है
केवल सर कटते हैं
और हृदय बंटता हैं

दद्दा तुम्हारे भोले पन का
फायदा उठा रहे हैं !

तुम्हे केवल मोहरा बना रहे हैं,

यदि दंगे के नाम से
बाहर जाओगे,
तो घर में
मेरा मरा मुँह पाओगे

और सुनो-
लाशो की ढेर पर
रखी कुर्सी में
मैं नहीं बैठ पाऊंगी

अब अपनी
मनवाऊंगी
मै केवल
पहलवान की बीवी
ही कहलवाऊंगी।

आमरण अन्नशन

आमरण अन्नशन
पर बैठे देख

बेटे ने बाप से पूछा-
पापा !
आमरण अन्नशन
क्या होता है बतलाइये,
जरा विस्तार से समझाइये।

पापा बोले-
बेटा !
आमरण अन्नशन
एक बहुत बडे
महात्मा की देन है,
अपनी बात
मनवाने का,
सीधा और सच्चा लेन है,

भूखों के प्रति
सबकी सहानुभूति होती है,
ये जनता भी
बिना सोचे समझे
उन्हीं का साथ देती है।

यह सुन-
बेटा मुस्कुराया
आमरण अन्नशन
का
अर्थ
उसके समझ में आया।

अगले दिन
उसने
गजब कर दिया।
नई मोटर साइकिल के लिये,
घर पर ही,
आमरण अन्नशन कर दिया।

बडे गर्व की बात है

मंत्री संग बैठना ,
बात-बात में ऐठना
मतलब की सेकना,
ऊँची-ऊँची फेकना,
बडे गर्व की बात है।
घोटाला करवाना,
सबूत मिटवाना,
साफ बरी हो जाना,
मंत्री पद पाना,
बडे गर्व की बात है।
चुनाव को जीतना,
विरोधियो को खीचना,
कुर्सी हिलाना,
सत्ता गिराना,
बडे गर्व की बात है।
क्लबो में जाना,
जूआ जमाना,
जाम टकराना,
देर रात घर आना,
बडे गर्व की बात है।
उंगली पर नचाना,
उल्टी गंगा बहाना,
अपनी मनवाना,
पडोसियों को लडवाना,
बडे गर्व की बात है ।
साहब को पटाना,
कुत्ते को नहलाना,
तोहफा ले जाना,
प्रमोशन पा जाना,
बडे गर्व की बात है।
पार्लर में जाना,
नई साडी दिखाना,
स्विमिंग में नहाना,
हमेशा देर से आना,
बडे गर्व की बात है।
समता का व्यवहार बनाना,
गरीब पर उपकार करना,
सत्य को स्वीकार करना,
बच्चो में संस्कार भरना,
बडे गर्व की बात है।
मंदिर की सीढी चढना,
मस्जिद में नमाज पढना,
गुरुदारे में मत्था टेकना,
बुराई को उखाड फेकना,
बडे गर्व की बात है।
अतिथि सत्कार करना,
बुराई का तिरस्कार करना,
माँ का मान करना,
गुरु का सम्मान करना,
बडे गर्व की बात है।
बेटे को सेना में भर्ती कराना,
देश भक्ति का पाठ पढाना,
देश के लिये मिट जाना,
शहीद की माता कहलाना,
बडे गर्व की बात है।

जन-सेवा

सबेरे-सबेरे
श्रीमती जी मुझसे बोली-
ये जी !
हमारा पडोसी
भूकंप पीडितो की सहायता,
करके आया है

साथ में
कलर टीवी, वीसीआर
और कुछ गहने-जेवर लाया है।
तुम भी
पीडितों की सहायता
करने जाओ ना,
उनकी तरह
पुण्य कमाकर आओ ना,

मैने कहा-
अरी भाग्यवान !
मैं कोई नेता नहीं
एक शिक्षक हूँ
अब तू ही बता,
ऐसा करना ,
मुझे क्या जंचेगा ?
उन मृतकों का ,
क्या एक भी सामान
हमसे पचेगा ?

हॉ
यदि उन पीडितों के
सहायतार्थ गया
तो सचमुच पुण्य कमाऊंगा।
किसी
अनाथ बच्चे को
जरुर गोद लेकर आऊंगा।

और सुन !
जिस दिन
मेरे अंदर का शिक्षक
मर जायेगा।
उस दिन
तेरा घर भी
कलर टीवी, वीसीआर ,
और गहने जेवरो से
भर जायेगा।

सफलता का राज

कवि मित्र ने पूछा-
यार ! तुम
नगर के हर कवि सम्मेलन में,
फिट हो जाते हो,
दो-चार कविताएं सुनाते हो
और हिट हो जाते हो,
इसका राज
हमे भी बतलाओ।
इस कवि सम्मेलन में,
मुझे भी हिट कराओ।
हमने कहा-
नगर में जब भी कवि सम्मेलन
होता है,
उससे पहले
बच्चों के अभिभावको को
बुलवाता हूँ
प्यार से धमकाता हूँ
नगर में कवि सम्मेलन है आईये,
साथ में पडोसियों को भी लाईये,
मेरी कविता में
वाह! वाह किजीये,
और ताली बजाईये।
नहीं आये तो सोच किजीयेगा।
अगले दिन
जब मै स्कूल जाऊंगा ,
आपके बच्चो को
अपनी बीस पच्चीस
कविताएं रटवाऊंगा।
अरे!
घर में आपका,
जीना दूभर हो जायेगा।
जब बात-बात में
आपका बच्चा
आपको,
मेरी कविताएं सुनायेगा।
बेचारे!
मेरी धमकी से सहम जाते हैं,
कवि सम्मेलन में आते हैं,
पडोसियों को भी लाते हैं,
मेरी कविताओ पर
वाह! वाह करते हैं और ताली
बजाते हैं।
आज भी वे
अपना वादा निभायेगे,
जरुर आयेगे,
मेरी कविताओ पर
वाह! वाह करेगे और ताली
बजायेगे।

ससुराल में होली

फोन पर
ससुर जी बोले-
दामाद जी!
इस बार होली में आईये
ससुराल में
होली मनाईये।

हमने सोचा!
ससुराल में होली!
खुब छनेगी,
सालियो संग होली!
खुब जमेगी

बस से उतरे,
ससुराल आये,
दरवाजे पर ससुर जी ने आगवानी
की,
मुस्कुराये!

अंदर का माहौल
जोरदार था,
हर कोई रंगो से
सराबोर था,
इतने में
सबसे छोटी साली,
मुसकुराते हुए आई,
गुड और पानी साथ लाई,
पीछे से
मझली साली आई,
नैन मटकाई
और
अपना कमाल दिखा दिया
शर्बत की जगह,
मुझे भंग पिला दिया
बॉडी बिल्डर साला
अपने कुत्ते के साथ आया,
गले मिला
और जोरदार हाथ मिलाया।

मै बडी मुश्किल से,
उसे झेल गया।
इतने में उसका कुत्ता,
टांग उठाया,
और
सबसे पहले होली खेल गया।

अब थी सामने,
ताडका सी भारी भरकम काया,

देखा मै घबराया,
हाथो में गुलाल था,
चेहरा हरा, नीला, पीला, लाल था

ज्यो ही हाथ बढाई,
मै ढीला हो गया।
रंगने से पहले ही
मेरा चेहरा पीला हो गया।

इतने में सभी साले,
मुझ पर झपटे,
किसी के हाथ में रंग,
किसी के हाथ में गुलाल था।
उनकी गिरफ्त में,
मेरा बडा बुरा हाल था।

घर में था
हाहा-हीही का शोर
मै भी था रंगों से सराबोर
भंग की तरंग में,
मै भी झुमने लगा,
भाभी की जगह,
भैस को पकड चुमने लगा।

तभी साले-सालियों ने
अगला कमाल
दिखा दिया
जबरदस्ती पटक
मुझे चोली-घाघरा पहना दिया
पलक झपकते
नचनिया बना दिया

लेकर इस वेश में
पूरे गाँव में घूमाया
ढोलक की थाप पर
खूब नचाया

मै थक कर चूर था
क्या करूँ
उनके हाथों मजबूर था

ससुराल का वह फाग
जब जब याद आता है
आज भी
मेरा रोंगटा खडा हो जाता है।

बडे घर की बेटी

बचपन में उसे
कहते थे रानी,
वह बढ़ने लगी
हिरणी जैसी कुलांचे भरने लगी
दिनो दिन उसकी कंचन काया
निखरने लगी
रानी के नखरे,
क्या कहें
जब से कालेज जाने लगी
इंग्लिश में
कुछ-कुछ बडबडाने लगी
बेबी से बाला हुई
उमर खैयाम की
प्याला हुई
ज्योति उसके यौवन की
जलने लगी
सुनकर उसकी जूबान
नौकरानी भी
कूढने लगी
कहने लगी--
मालिक की छोरी ,
जैसे जलती होरी
पहली बार रखा कदम
कालेज में
लडके आस पास मंडराने लगे
अधपके बाल,
अधेडों के भी दिल
होठो पे आकर
फडफडाने लगे
स्कूटी से
कालेज बाउंड्री में आई
पीछे से
लडको की एक टोली आई
धीरे-धीरे उसके दोस्तो का
दायरा बढ़ने लगा
उसकी मुस्कान पे
कालेज का बाबू भी
आहे भरने लगा
वह भी एक फुलझडी
सहेलियों में नायिका सी खडी
एक बार बोली--
हम तो नमकीन हैं
लडको पे कयामत हो गयी
उस दिन कैन्टीन में
रसगुल्ले की जगह
नमकीन की मांग
ज्यादा हो गई
मार्च में इम्तिहान आया

परीक्षा अच्छे-अच्छो को
हिला देती है
लटके-झटके सब कुछ
भुला देती है
दो पेपर बिगाड आई
इम्तिहान में
सारा चहकना और
श्रृंगार करना
भुल गई दो दिन में
एक प्रोफेसर के पास आई
रोई गिडगिडाई
और सिसकियों का
समा बाँध दिया
हिमालय पिघलता है
नारी के
आँसू को देख
वे क्यों न पिघलते
कन्या के आँसू काम आया
प्रोफेसर ने बेटी समझ
नम्बर बढवाया
रिजल्ट निकला
वह पास थी
वह खुशी से
लोट रही थी
चहकती-मटकती
कालेज प्रांगण में
सबसे बधाईयाँ
बटोर रही थी
एक भब्य पार्टी का आयोजन
उसके पापा ने किया
अपनी अमीरी का
अच्छा खासा परिचय दिया
पार्टी में हर बडे लोग
आये थे
बस एक वही नहीं
आये थे
जिसने उस कन्या के नम्बर
बढवाये थे।

भांग की बरफी

यूं तो ,
हर साल होली में
भांग की बरफी लाता हूँ

मित्रो को ,
स्वागत में खिलाता हूँ

इस बार पता नहीं क्या सूझा
कुछ नहीं बुझा
पत्नी से बोला-
प्रिये! अबकी बरस होली में,
मेरी मान लो।
एक बरफी प्यार से खा लो।

झुंझलाते हुए
श्रीमती बोली।
क्यों जी ?
मुझे भंग की बरफी खिलाओगे
होली का सत्यानाश करवाओगे

बार, बार मनाने पर
मेंरे झांसे मे आ गई

एक दो करके
चार, चार बरफी खा गई।

इसके बाद मैं
मित्रो की टोली में आ गया
बाहर फाग का शोर था,
हर कोई रंगो से सराबोर था

चारो ओर उड रहा था गुलाल,
मेरा चेहरा भी था,
हरा, नीला, पीला, लाल,

कुछ घंटों बाद आया,
दरवाजा खटखटाया,

दरवाजा खुला,
श्रीमती झूमते हुए बोली-
अभी वो बाहर गये हुए हैं,
फिर आइयेगा

मैने कहा-अरे! सुनती हो
मैं हूँ भाई।
क्यों करती हो ढीठाई।

पत्नी बोली।
अरे! आप हैं ?

पर अभी-अभी गया
वह कौन था ?
तुम्हारी तरह उसका भी निकला
हुआ तोंद था।

मैंने भी लेकर गुलाल
कर दिया चेहरा
उसका
नीला, पीला, लाल,
बेचारा
मेरी मनमानी झेल गया
पर
शालीनता से
होली खेल गया।

यह सुन !
मैं
सकते में आ गया,
मेरी अनुपस्थिति में,
मेरा डूप्लीकेट
कौन आ गया,

मैने फिर पूछा-
अरी! भाग्यवान
इससे आगे तो नहीं बढा था,

श्रीमती बोली- नहीं जी !
बेचारा चुपचाप मौन खडा था
भंग की तरंग में,
जो कुछ करना था
मैने ही किया,
उसने तो केवल
एक गिलास पानी भर पिया

मैने तुरन्त ईश्वर को
धन्यवाद दिया।
जिसने
अनर्थ होने से बचा लिया
तब से आज तक
होली बडी शालीनता से
मनाता हूँ।
न मै भांग खाता हूँ ।
न ही
पत्नी को खिलाता हूँ ।

सरसो तेल कांड

हमने नेता जी से पूछा-
राजधानी में,
सरसो तेल कांड,
कई लोग मरे,
समाचार पढ़ा,
दुःख की बात थी,
पर मुझे
कोई मलाल नहीं हुआ।
अफसोस तो इस बात का है
इस घटना में,
एक भी
नेता हलाल नहीं हुआ।

यह सुन,
नेता जी बोले-
अरे! लाला जी!
क्या बात करते हैं?
हमारी तुलना, उनसे करते हैं,
अरे!
हम आदमी तो क्या,
जानवरों का भी भोजन,
पचा जाते हैं,
इसीलिए तो
समाचारों की सुर्खियो में आ जाते हैं
ये भला सरसो का तेल,
हमारा क्या बिगाड़ पायेगा,
लीटर दो लीटर तो ऐसे ही पच जायेगा।

और आप!
हमारी पाचन शक्ति का
क्या लगा पाईयेगा?
हमारी पार्टी में
शामिल हो जाईये,
खुद ब खुद समझ जाईयेगा।

हम भी
उन मृतकों को
श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं,
बेचारे!
असमय ही
मौत के मुँह में खो गये,
दुःख तो
इस बात का है,
हमारे वोटर कम हो गये।

बाथरुम में गीत

नई नवेली दुल्हन से
देवर ने पूछा-
भाभी जी!
जब आप बाथरुम में नहाती हैं तो
अंदर अच्छे, अच्छे गाने
गुनगुनाती हैं,
पर हम सबके सामने,
गाने में
क्यों शरमाती हैं?
दुल्हन जरा घबराई !
शर्माई! सकुचाई
फिर धीरे से बोली-
क्या करु देवर जी !
हमारी
कुछ मजबुरी है।
आपके
बाथरुम के
दरवाजे के अंदर
सिटकनी नहीं है
इसलिये
अंदर गुनगुनाना जरुरी है।

विदेशी हाथ

श्रीमान जी
हर घटना-दुर्घटना,
के बाद
वे यही करते हैं
इसके पीछे
विदेशी हाथ है! विदेशी हाथ है !
आजकल
विदेशी हाथ के ही गुन गाते हैं,
इसलिए
नींद में भी
विदेशी हाथ! विदेशी हाथ!!
बडबडाते हैं
बरसों बाद
उनका एक मित्र आया,
मिलते ही गले लगाया
बोला-
मंत्री बनते ही
एक बेटे का
बाप बन गया
क्या बात है !
श्रीमान तपाक से बोले-
इसमें कौन सी नई बात है
इसके पीछे भी
विदेशी हाथ है।

भाषण

पत्नी पूछी-
ये जी!
भाषण क्या होता है?
बतलाइये
जरा फिर से
समझाइये।
मैने कहा-
ऊंचे मंच पर
माईक पकड कर
लगातार बोलता है,
लोगों को तौलता है
लच्छेदार शब्दों की,
झडी लगाता है।
श्रोता भले ही ऊकता जाये,
खुद नहीं उकताता है
आजकल यही भाषण कहलाता है!
वर्तमान में
भाषण का,
एक ही स्वभाव होता है
इनमें ज्ञान तत्व का
आभाव होता है
यूं तो भाषणों के
अनेक प्रकार हैं
जिनमें से कुछ
इस प्रकार हैं
चुनावी भाषणों पर
बडा ही खेद होता है।
इस समय
सडे-गले अंडों, टमाटरों का
भाव तेज होता है
राजनीतिक भाषण भी
कभी- कभी गजब कर जाते हैं
इसलिए समाचारों के
सुर्खियों में आ जाते हैं
सुनो भाग्यवान!
भाषण भी एक कला है
जिसने अच्छे अच्छों को छला है
जो इसके झाँसे में आया है
सिर्फ खोया है
कुछ नहीं पाया है
यह सुन पत्नी बोली-
वाह जी!
आपने भाषण का
अच्छा निचोड निकाला है
तब ही तो
भाषण पर
अच्छा खासा
भाषण दे डाला है।

चंदा-धंधा

एक दिन सबेरे सबेरे
कल्लू पहलवान
मेरे घर आया
बोला --
गुरुदेव!
आप भी पुनीत कार्य में
हाथ बटाईये
भूकंप पीडितों के सहायतार्थ
चंदा लेने
हमारे साथ आईये।

आपके व्यक्तित्व का फायदा
हम भी उठायेंगे।
आपके मुहल्ले से
चार पांच हजार
जरूर पा जायेंगे।

कल्लू का यह रुप देख
मैं भी चकराया
इसे कब से
जन सेवा करना आया।

मैनै पूछा --
अरे! कल्लू
एक बात बताओ
अखाड़े से जन सेवा का राज
हमें भी समझाओ

कल्लू बोला --
अरे! गुरुदेव
आपसे क्या छूपाना
कुछ दिन पहले
दद्दाजी जे बुलवाया था
अपना प्लान समझाया था

जो सबसे ज्यादा चंदा
उगाही करके लायेगा
उसे ही चुनाव में
टिकट दिया जायेगा

राज की बात बताऊँ
इस अंशदान का
अंश भर ही
पीडितों के
कोष में जाता है
बाकी तो सब
हमारे पार्टी के काम आता है

भोली भाली जनता के
सहानुभूति का फायदा
हम ही तो उठाते हैं
लाखों बाँट कर
करोड़ों कमाते हैं

अब क्या बताऊँ गुरुदेव
ये दौलत ही
हमारी सौत होती है
तब ही तो
हार्ट फेल होने से
हम जैसों की
मौत होती है।

यह सुन
मैनै कल्लू से बोला --
अरे ! कल्लू
तू ने कैसे लोगों से
नाता जोड़ा है
जिन्होंने मृतकों को भी
नहीं छोड़ा है

तेरे इस काम में
मै हाथ नहीं बटाऊँगा।
मै स्कूल में
बच्चों को परोपकार के
किस्से सुनाऊंगा

और सुन !
जिस दिन तुम्हारा असली रुप
जनता के सामने आयेगा
तो उसके प्रकोप से
तुझे कोई नहीं बचा पायेगा।

बस यात्रा

नगर के
खटारा बसों में
सफर किजिये,
और
उम्र से पहले
स्वर्ग के
दर्शन किजिये।

यात्रा का
आपको डबल लाभ मिलेगा
एक तो
आपको स्वर्गलोक
दुसरा
आपके परिवार वालों को
दस लाख का नगद मिलेगा।

दुर्भाग्य से
आप स्वर्गलोक नहीं पहुंचे
केवल
सर फूटे,या हाथ पैर टूटे
तो
नर्कलोक जैसा
सरकारी अस्पताल मिलेगा।

जानते हैं
वहाँ का परिणाम?
आप हो जायेगें
विकलांग!

अरे! आजकल
उस हास्पिटल के
कितने लोग आभारी हैं
वहीं के बदौलत तो
सरकारी कर्मचारी हैं

तो श्रीमान!
हमारा कहना मानिए

देश की जनसंख्या समस्या
सुलझाईये
या
बेरोजगारी मिटाईये

एक बार
खटारा बसों में
सफर कर आइये।

परीक्षा फल

मेरा मित्र
एम.ए.की परीक्षा देने
शहर आया,
दुर्भाग्य
बिमारी के कारण
दो पेपर नहीं दे पाया,
रिजल्ट निकला ,
आश्चर्य!
वह पास था,
इस घटना से
बेहद उदास था।

विश्व विद्यालय को पत्र लिखा
ऐसा कैसे हुआ ?
जबाब में-
छपा छपाया
पत्र आया,
यहाँ हर कार्य
गोपनीय और आपके हित में
होते हैं !
क्योंकि !
विश्व विद्यालय के निर्णय
अंतिम निर्णय होते हैं।

प्रियतमा

दरस तुम्हारी गरमा-गरम चाय
परस प्रिय ज्यो ठंडा पानी।
बात मिर्च की ताजी भजिया,
फली तेल बेसन में छानी ।

फिल्म एलबम हृदय तुम्हारा,
काश्मीर नयनों की घाटी।
प्यारे गोंद सा प्यार तुम्हारा,
सुरत गढी चीनी की भाँति।

चाल चहकती गौरेया सी,
फूदक-फूदक बढती ही जाती ।
आँचल पंख उडाती फरफर
पल भर नहीं कहीं रुक पाती।

मिल्क पाउडर हँसी तुम्हारी ,
घुलती ही घुलती ही जाती।
डी.डी.टी.की छिडक सरिखी
दे फूहार रुकती बल खाती

साली महिमा

साली सुख की खान है भैया
ससुराली की जान है भैया
नहीं हो जिनकी एक भी साली
तो ससुराल शमशान है भैया

बिन पत्नी ससुराल जब पहुंचे ,
साली ही सम्मुख आती है।
उसकी मधुर मुस्कान देखकर
सारी थकान मिट जाती है।
हों जिनकी दो चार सालियां
बडा ही वो भाग्यवान है भैया
साली सुख की...

नैन मटक्का करती फिरती,
छेड छाड जब करती है।
धीर वीर जीजाओ के भी
लार टपकने लगती है।
करे शरारत जितनी भी वो,
होना न परेशान तू भैया
साली सुख की...

घर गृहस्थी में फंस कर
जब बीबी फीकी लगती है
सदा बहार रहती है साली
जीजा के मन बसती है
नहीं ये आधी घरवाली है,
सच्चा मित्र समान रे भैया
साली सुख की.....

बेटी

बेटी
विदा जरूर होती है
पर
दिलों से दूर कहाँ होती है ..
उसके
खिलौने, टैडी
आलमारी भर कपडे
चप्पलों की कतारें
पास हैं मेरे ..
जीते मैडल, कप,
और
पुरस्कारों से
धूल पोंछता हूँ
तब
उसके सर पर हाथ रखने का
एहसास
होता है..
मीठी काफी के हर घूंट में
तीखी चटनी, पोहे, दाल फ्राई
मोटी पतली रोटियों में ..
हर पल पास मेरे
होती है
कौन कहता है
बेटियां पास नहीं होती ..
समय से दवा नहीं लेने पर
पत्नी की झिडकी में
उसकी याद ..
उसकी मुस्कान
गान
रूठना मनाना
सब कुछ तो यही है ..
बस
देह से दूर है ..
सुन लेता हूँ
मोबाईल पर
उसकी आवाज
और
लगा लेता हूँ
उसकी खुशी का अंदाजा
हंसकर
बताती है ..
सासु मां से हुई मीठी मीठी बातें
ससुर जी के सेवा के किस्से
वगैरह वगैरह ..
संतोष होता है
सुनकर ..
और
अनायास
निकल जाता है ..
''अखंड सौभाग्यवती भवः''
सचमुच
बेटियाँ
प्यारी होती हैं
जन्नत की हूर होती है ..
बस
पिता के घर से
विदा जरूर होती हैं
पर कहाँ दिलों से दूर होती हैं ..

मायका

आज फिर
याद आई आपकी

जब भी आती हूं मायके
उतरते ही
बस से
सभी बच्चे
घेर लेते हैं मुझको
बुआ-बुआ
बोलकर

भैया-भाभी का
मुस्कुराता हुआ चेहरा
आशीष के लिये
बढते उनके हाथ
करते हैं
मुझमे
उर्जा का संचार
और भूल जाती हूँ
यात्रा की सारी थकान

बच्चों का कंधों पर
झूलना
बैग-पर्स का
टटोलना
टाफी-मिठाईयों
के लिए
जिद्द करना
याद दिलाती है
मेरा
बचपना

फिर मेरी ऑखे
खोजने लगती है
आपको
आँगन में
दलान में

कनखियों से
देखती हूँ
आपके कमरे की तरफ
और
पोछ लेती हूँ
आँखो की कोर से
टपकते आंसूओ को

सचमुच
भरे-पूरे परिवार के बीच लगता है

एक खालीपन
आपके
नहीं होने का

मायका
एक ऐसा शब्द
जो दिलों के गहराईयों
से जुडा
हर नारी का स्वाभिमान
आते ही
जिक्र
आँखो के सामने
आ जाती है
मधुर स्मृतियां

बचपन की शरारतें
पुरानी सहेलियाँ
गुडडे गुडियों का खेल
लडना झगडना
और फिर मेल

तू-तू मैं-मै
ना-ना और हाँ-हाँ
और सबसे
बढकर याद आती है
माँ !!

माँ ही समझती है
बेटी का दर्द
बिछुड़ने का
और मिलने की
खुशी भी

इसीलिए तो
आँखे खोजती हैं
सबसे पहले
मां को,

कितना भी मिले
प्यार
स्नेह
अपनापन
भाई का, भाभी का
पिता का
फिर भी
होता है
माँ
से ही मायका !

आशियाना

क्यों? दी थी
आवाज
पूछा ही क्यों?
कौन हूँ मैं ?
बढाया ही क्यों?
हाथ
साथ चलने का वादा
चाहा ही क्यों?
क्या हक था तुम्हें,
जगाने का
सोये सपनो को
निर्मल,
हंसाया ही क्यों?
नफरत थी मेरी हंसी से,
गुदगुदाया ही क्यों?
हसरत नहीं थी
दिल में,
मेरे दोस्त, कही कोई बाकी
आशियाना !
चार तिनकों का
दिन चार में
बनाया ही क्यों?

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - **डॉ. सपन सिन्हा**

जन्म - २५/०१/१९६०

पिता - स्व. रामनंदन प्रसाद सिन्हा

माता - श्रीमती निर्मला देवी सिन्हा

शिक्षा - एम.ए. (हिन्दी, समाज शास्त्र) पीएचडी

व्यवसाय - प्रधान पाठक(शिक्षा विभाग)

रुचि - कविता लेखन, रंगकर्मी

सम्मान- विश्व हिन्दी रचनाकार मंच दिल्ली, के द्वारा राष्ट्र भाषा गौरव सम्मान (भोपाल)।

अन्य उपलब्धि -

विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में कविता का प्रकाशन।
आकाशवाणी केंद्र अम्बिकापुर से समय समय पर कविताओं का प्रसारण।
छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग के प्रांतीय सम्मेलन (कोरबा) में काव्य पाठ।
राष्ट्रीय कवि संगम के राष्ट्रीय अधिवेशन (माउंट आबू) में काव्य पाठ।
राष्ट्रीय कवि संगम के राष्ट्रीय अधिवेशन (वृंदावन) में काव्य पाठ।
विभिन्न कवि सम्मेलनों में काव्य पाठ।

पता - साँई शुभ, अपार्टमेंट, वार्ड नं.-०९, (डॉ. नियोगी सोनोग्राफी सेंटर के पास) मनेंद्रगढ़, जिला- कोरिया, (छत्तीसगढ़)

मो. - ९८२६१५२५४३, ९४०६३६३३२३

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-050-6
मूल्य 60/-
शब्द सुगंध